❍ 01 / 12 / 22 की मुरली से चार्ट ❍

⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∫∫ 1 ∫∫ होमवर्क (Marks: 5∗4=20)

➢➢ ∗माया के तूफानो में मूंझे तो नहीं ?∗

➢➢ ∗याद का चार्ट रखा ?∗

➢➢ ∗कोई भी कार्य करते सदा दिल्ताख्तनशीन बनकर रहे ?∗

➢➢ ∗स्नेह और सहयोग के सतह शक्ति रूप धारण किया ∗

────────────────────────

✧ ⁰ ° ••☆••✧⁰ ° ••☆••✧⁰ ° ••☆••✧⁰ °

☆ ∗अव्यक्त पालना का रिटर्न∗ ☆

❂ ∗तपस्वी जीवन∗ ❂

✧ ⁰ ° ••☆••✧⁰ ° ••☆••✧⁰ ° ••☆••✧⁰ °

〰✧ ∗अब ऐसे ट्रान्सपेरेंट (पारदर्शी) हो जाओ जो आपके शरीर के अन्दर आत्मा विराजमान है, वह स्पष्ट सभी को दिखाई दे। आपका आत्मिक स्वरूप उन्हों को अपने आत्मिक स्वरूप का साक्षात्कार कराये,∗ इसको ही कहते हैं अव्यक्त वा आत्मिक स्थिति का अनुभव कराना।

✧ ⁰ ° ••☆••✧⁰ ° ••☆••✧⁰ ° ••☆••✧⁰ °

∫∫ 2 ∫∫ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚
☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆
✪ *श्रेष्ठ स्वमान* ✪
⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं बाप का सिकीलधा बच्चा हूँ"*

〰✧ सदा अपने को बाप के सिकीलधे समझते हो? *सिकीलधे अर्थात् बड़े सिक से बाप ने हमें ढूँढ़ा है। बाप ने बड़े सिक व प्रेम से आपको ढूँढ़ा है। आपने ढूँढ़ा लेकिन मिला नहीं। परिचय ही नहीं था तो मिले कैसे? लेकिन बाप ने आपको ढूँढ़ा इसलिए कहते हैं - 'सिकीलधे'। तो जिसको बाप ढूढ़े वह कितने भाग्यवान होंगे! दुनिया वाले बाप को ढूँढ़ रहे हैं और आप मिलन मना रहे हो।* कितने थोड़े हो, बहुतों का पार्ट है ही नहीं। थोड़ों का पार्ट है, इसलिए गाया हुआ है - कोटों में कोई। अक्षोणी सेना नहीं गाई हुई है, कोटों में कोई गाया हुआ है। तो यह खुशी वा स्मृति सदा इमर्ज रहे। हर कदम में खुशी अनुभव हो।

〰✧ अल्पकाल की प्राप्ति वालों के चेहरे पर वह प्राप्ति की रेखा चमकती है। आपको तो सदाकाल की प्राप्ति है। तो चेहरा सदा खुशी में दिखाई दे, उदास न हो। जो माया का दास बनता है वह उदास होता है। आप कौन हो? माया के दास हो या मालिक हो? *माया को अपनी ऑथोरिटी से भगाने वाले हो, ऐसी आत्मा कभी उदास नहीं हो सकती। कोई फिक्र ही नहीं है ना। कोई फिक्र या चिंता होती है तो उदास होते हैं।* आपको कौन-सी चिंता है? पांडवों को चिंता है? कमाने की, परिवार को पालने के लिए पैसे की चिंता है? लेकिन चिंता से पैसा कभी नहीं आयेगा। मेहनत करो, कमाई करो। लेकिन चिंता से कभी कमाई में सफल नहीं होंगे। चिंता को छोड़कर कर्मयोगी बनकर काम करो, तो जहाँ योग है वहाँ कार्य कशल होगा और सफलता होगी। चिंता से कभी पैसा नहीं आयेगा।

अगर चिंता से कमाया हुआ पैसा आयेगा भी तो चिंता ही पैदा करेगा। जैसा बीज होगा वैसा ही फल निकलेगा और खुशी-खुशी से काम करके कमाई करेंगे तो वह पैसा भी खुशी दिलायेगा। वह दो रुपया भी दो हजार का काम करेगा और वह दो लाख दो रुपये का काम करेगा। इतना फर्क हैं, इसलिए चिंता क्या करेंगे!

〰✧ सच्ची दिल वालों को सच की कमाई मिलती है। बाप भी दाल-रोटी जरूर देते हैं। सुस्त रहने वाले को नहीं देंगे। *काम तो करना ही पड़ेगा क्योंकि पिछले हिसाब भी तो चुक्तू करने हैं। लेकिन चिंता से नहीं, खुशी से। कोई भी काम करो - योगयुक्त होकर करो। योगी का कार्य सहज और सफल होता है, ऐसा अनुभव है ना! याद में कोई भी काम करते तो थकावट नहीं होती।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *तो रोज चेक करो, समाचार पूछो - हे मन मन्त्री, तुमने क्या किया?* कहाँ धोखा तो नहीं दिया? कहाँ अन्दर ही अन्दर ग्रुप बना देवे और आपको राजा की बजाय गुलाम बना दे! तो ऐसा न हो!

〰✧ देखो, *ब्रह्माबाप आदि में रोज ये दरबार लगाते थे* जिसमें सभी सहयोगी साथियों से समाचार पूछते, ये रोज की ब्रह्माबाप की आदि की दिनचर्या है। सना है ना? तो ब्रह्माबाप ने भी मेहनत की है ना!

〰✧ *अटेन्शन रखा तब स्वराज्य अधिकारी सी विश्व के राज्य अधिकारी बने।* शिव बाप तो है ही निराकार लेकिन ब्रह्माबाप ने तो आपके समान सारी जीवन पुरुषार्थ से प्रालब्ध प्राप्त की। तो *ब्रह्माबाप को फालो करो।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *अभी तो बड़े-बड़े दाग़ भी छुपाने से छुप जाते हैं, क्योंकि अभी शीश महल नहीं बना है जो कि चारों ओर के दाग स्पष्ट दिखाई दे जावें। जब किनारा कर लेते, तो दाग छिप जाता अर्थात् पाप दर्पण के आगे स्वयं को लाने से किनारा कर छिप जाते हैं। छिपता नहीं है, लेकिन किनारा कर और छिपा हुआ समझ स्वयं को खुश कर लेते हैं। बाप भी बच्चों का कल्याणकारी बन अनजान बन जाते हैं जैसे कि जानते ही नहीं।* अगर बाप कह दे कि मैं जनता हूं कि यह दाग इतने समय से व इस रूप से है तो सुनने वाले का क्या स्वरूप होगा? सुनाना चाहते भी मुख बन्द हो जावेगा, क्योंकि सुनाने की विधि रखी हुई है। *बाप जब कि जानते भी हैं, तो भी सुनते क्यों हैं? क्योंकि स्वयं द्वारा किये गये कर्म व संकल्प स्वयं वर्णन करेंगे तो ही महसूसता की सीढ़ी पर पाँव रख सकेंगे।* महसूस करना या अफ़सोस करना या माफ़ी लेना बात एक हो जाती है। *इसलिए सुनाने की अर्थात् स्वयं को हल्का बनाने की या परिवर्तन करने की विधि बनाई गई है। इस विधि से पापों की वृद्धि कम हो जाती है।* इसलिए

अगर शीश महल बनने के बाद, स्वयं को स्पष्ट देख कर के स्पष्ट किया तो रिज़ल्ट क्या होगी, यह जानते हो? बापदादा भी ड्रामा प्रमाण उन आत्माओं को स्पष्ट चैलेन्ज देंगे, तो फिर क्या कर सकेंगे? *इसलिए जब महसूसता के आधार पर स्पष्ट हो अर्थात् बोझ से स्वयं को हल्का करो, तब ही डबल लाइट स्वरूप अर्थात् फ़रिश्ता व आत्मिक स्थिति स्वरूप बन सकेंगे।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- बाप आये है राजयोग सिखलाकर विश्व का महाराजा महारानी बनाने"*

➳ _ ➳ गुलाबी ठण्ड से अठखेलियाँ करती इन्द्रधनुषी सूरज की किरणों से सजी सुहावनी सुबह में मैं आत्मा पार्क में बैठ योगा कर रही हूँ... अनुलोम विलोम करती मैं आत्मा सांसो को अन्दर बाहर छोडते हुए एकाग्रता का अनुभव कर रही हूँ... एक एक श्वांस पर ध्यान देती मैं आत्मा धीरे-धीरे इस देह से अलग होती जा रही हूँ... *सांसों के तार तार में प्रभु प्यार को पिरोकर मैं आत्मा अपने प्यारे प्रभु के पास पहुँच जाती हूँ वतन में...*

❉ *दिल में फूलों सा सजाकर अपने दिल का राजा बनाकर प्यारे बाबा कहते हैं:-* “मेरे मीठे फल बच्चे... अपने फलो को यँ कम्हलाते देख बागबान बाबा को

भला कैसे चैन आये... अपने फूलो की चिंता में आसमानी बागबान धरा पर दौड़ा चला आये... *बच्चों को गोद में ले ज्ञान योग से सींच फिर से राजाओ का महाराजा गुलाब सा महकाएँ..."*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा प्यारे बाबा से राजयोग सीखकर नई दुनिया के लिए नई तकदीर बनाकर कहती हूँ:-* "हाँ मेरे मीठे प्यारे बाबा... मै आत्मा मीठे बाबा संग यादो में रहकर खुशनुमा फूल बन विश्व धरा पर महक रही हूँ... *कभी निराश थकी और दुखी मै आत्मा आज ईश्वर पिता से राजयोग सीख़ कर अपना खोया स्वराज्य फिर से पाकर सदा की मुस्करा उठी हूँ..."*

❊ *ज्ञानयोग से श्रृंगार कर प्यार का सरगम छेड़कर मीठे बाबा कहते हैं:-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... ईश्वर पिता ज्ञानयोग की जादूगरी से अपने बच्चों को विश्व का मालिक सजाते है... यह अदभुत कार्य सिवाय विश्वपिता के कोई मनुष्यमात्र कर ही न सके... *महान पिता यह महान कार्य कर मनुष्य से देवताई रूप में ढाल स्वर्णिम युग में सजाते है..."*

➳ _ ➳ *युगों युगों की जो चाहत थी उस मंजर का दीदार पाकर मैं आत्मा कहती हूँ:-* "मेरे प्राणप्रिय बाबा... मै भगवान को पाने वाली और उसके सानिध्य में बैठकर राजयोग सीखने वाली महान आत्मा हूँ... *मेरा बाबा अपना धाम छोड़ मेरे उज्ज्वल भविष्य को बना रहा...* मुझे देह के मटमैले आवरण से निकाल सुंदर मणि सा फिर से दमका रहा है..."

❊ *टूटे दिल के तार जोडकर हर घडी सांसो को यादों का उपहार बनाकर मेरे बाबा कहते हैं:-* "प्यारे सिकीलधे मीठे बच्चे... *ईश्वर पिता की यादो में स्वराज्य अधिकारी बन विश्व महाराजन बन जाओ...* मीठे बाबा के साये में सारे गुण और शक्तियो को स्वयं में भरपूर कर मुस्कराओ... सारे खजाने अपने नाम कर मालामाल हो जाओ... खुबसूरत भाग्य को अपनी तकदीर में सजा दो..."

➳ _ ➳ *काँटों के भंवर से निकल अपने साहिल को सामने पाकर मैं आत्मा कहती हूँ:-* "हाँ मेरे मीठे बाबा... मै आत्मा किस कदर भाग्य की धनी हूँ... भगवान बैठ राजयोग सिखा रहा... मेरे सखो की चिंता में परमधाम छोड धरती

पर आ गया है... *अपने प्यार की छाँव देकर सारे विकारो की तपन से महफूज कर पूरे विश्व की राजाई का हुनर सिखा रहा है..."*

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- रूहानी सेवाधारी बन रूहों को ज्ञान का इंजेक्शन लगाना है*"

➳ _ ➳ सड़क पर पैदल चलते हुए मैं सामने से आ रहे हर मनुष्य की भृकुटि पर विराजमान अपने आत्मा भाई को देखती जा रही हूँ और विचार करती हूँ कि आज हर आत्मा 5 विकारों की बीमारी से पीड़ित है तभी तो सब दुखी और अशांत दिखाई दे रहें हैं। *केवल ज्ञान का इंजेक्शन ही इन बीमार रूहों का उपचार है। सुप्रीम सर्जन शिव पिता द्वारा दिया जा रहा सत्य ज्ञान ही हर रूह को 5 विकारों की बीमारी से मुक्त करने का उपाय है* और अपने शिव पिता के इस रूहानी मिशन में रूहानी सेवाधारी बन रूहों का ज्ञान का इंजेक्शन लगाकर उन्हें इस बीमारी से छुड़ाने का जो कर्तव्य भगवान ने हम बच्चों को दिया है उस कर्तव्य को करना हर ब्राह्मण बच्चे का फर्ज और भगवान के स्नेह का रिटर्न है।

➳ _ ➳ अपने शिव पिता के रूहानी हॉस्पिटल का रूहानी सर्जन बन अब मुझे हर मनुष्य आत्मा को ज्ञान का इंजेक्शन लगा कर 5 विकारों की बीमारी से छुड़ाने का ही रूहानी धन्धा हर समय करना है *इन्ही विचारों के साथ अपने शिव पिता का आह्वान कर, उनकी छत्रछाया के नीचे स्वयं को अनुभव करते अब मैं अपने आस पास से गुजरने वाली हर आत्मा को मनसा साकाश द्वारा परमात्म अवतरण का संदेश देती जा रही हूँ*। चलते - चलते एक पार्क में पहुँच कर वहाँ एकत्रित लोगों के समूह को परमात्म ज्ञान दे कर उन्हें 5 विकारों की बीमारी से मुक्त होने का उपाय बता कर वापिस अपने सेवा स्थल पर लौट आती हूँ।

➳ _ ➳ अपने मन बुद्धि को परमात्म याद में स्थिर करके स्वयं को परमात्म शक्तियों से भरपूर करने के लिए अब मैं अपने निराकारी ज्योति बिंदु स्वरूप में स्थित हो कर, नश्वर देह से ममत्व निकाल, स्वयं को उससे बिल्कुल न्यारा करते हुए, उससे बाहर आ जाती हूँ। *देह से न्यारी होकर एक बहुत ही सुन्दर उपराम स्थिति का मैं अनुभव कर रही हूँ*। हर बन्धन, हर बोझ से मुक्त यह उपराम स्थिति मुझे धीरे धीरे ऊपर आकाश की और ले कर जा रही है। *एक अदभुत हल्केपन का अनुभव करते हुए मैं चैतन्य ज्योति ऊपर की और उड़ते हुए आकाश को पार कर जाती हूँ*।

➳ _ ➳ आकाश को पार करके, उससे भी बहुत ऊपर सफेद प्रकाश की एक बहुत सुंदर दुनिया मे मैं प्रवेश करती हूँ जहाँ चारों और लाइट के सूक्ष्म आकारी शरीर वाले फ़रिश्ते उड़ते हुए दिखाई दे रहें हैं। *फ़रिश्तों की इस दुनिया को भी मैं आत्मा पार कर जाती हूँ और उससे ऊपर अंतहीन विशाल ब्रह्माण्ड में मैं प्रवेश करती हूँ*। लाल प्रकाश की इस दुनिया में चारों और डायमण्ड के समान चमकती मणियों का आगार मन को बहुत सुंदर अनुभूति करवा रहा है। समस्त ब्रह्माण्ड में फैले शांति के अनन्त वायब्रेशन मुझ आत्मा को गहन शान्ति का अनुभव करवा रहें हैं।

➳ _ ➳ शान्ति की इस दिव्य अलौकिक दुनिया मे विचरण करते, *स्वयं को गहन शान्ति की शक्ति से भरपूर करते अब मैं ज्ञान, गुण और शक्तियों के सागर अपने शिव पिता के पास पहुँच कर उनकी शीतल किरणों की छत्रछाया के नीचे जाकर बैठ जाती हूँ और स्वय को ज्ञान, गुणों और सर्वशक्तियों से भरपूर करने के बाद उस विशाल ब्रह्माण्ड से वापिस लौट कर फ़रिश्तों की आकारी दुनिया मे आ जाती हूँ*। यहाँ आ कर मैं आत्मा अपना लाइट का सूक्ष्म आकारी शरीर धारण कर लेती हूँ और अपने प्यारे बापदादा से दृष्टि और वरदान लेने के लिए उनके सम्मुख पहुँच जाती हूँ।

➳ _ ➳ अपनी लाइट माइट और ज्ञान के अखुट खजानों से बापदादा मुझ फ़रिश्ते को भरपूर कर देते हैं और रूहानी सेवाधारी बन रूहों को ज्ञान का इंजेक्शन लगाने का रूहानी धन्धा करने का फरमान देकर, विजय का तिलक मेरे मस्तक पर लगा कर मझे विदा करते हैं। *ज्ञान और योग का बल स्वयं में

भरकर अब मैं फिर से अपने ओरिजनल ज्योति बिंदु स्वरूप में स्थित हो जाती हूँ और फ़रिशतो की दुनिया से नीचे आ कर साकारी मनुष्यों की दुनिया मे लौट कर, अपने ब्राह्मण स्वरूप में स्थित हो कर ईश्वरीय सेवा में लग जाती हूँ*।

➳ _ ➳ कभी स्थूल साकार तन द्वारा मुख से अपने सम्बन्ध सम्पर्क में आने वाली आत्माओं को ज्ञान रत्नों का दान देकर तो *कभी सूक्ष्म आकारी फ़रिशता स्वरूप द्वारा मनसा साकाश की सूक्ष्म सेवा करते विश्व की सर्व रूहों को ज्ञान का इंजेक्शन लगा कर उन्हें पाँच विकारों की बीमारी से मुक्त करने का रूहानी धन्धा अब मैं निरन्तर कर रही हूँ*।

∬ 8 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं कोई भी कार्य करते सदा दिलतख्तनशींन रहने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं आत्मा बेफिक्र बादशाह हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∬ 9 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं सदा स्नेही और सहयोगी आत्मा हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा सदैव शक्ति रूप धारण करती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा सदा नम्बर आगे लेती हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने

का अभ्यास किया ?

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ 1. *श्रेष्ठ शुद्ध संकल्प में इतनी ताकत है जो आपके कैचिंग पावर, वायब्रेशन कैच करने की पावर, बहुत बढ़ सकती है।* यह वायरलेस, यह टेलीफोन.... जैसे यह साइंस का साधन कार्य करता है वैसे यह शुद्ध संकल्प का खजाना, ऐसा ही कार्य करेगा जो लण्डन में बैठे हुए *कोई भी आत्मा का वायब्रेशन आपको ऐसे ही स्पष्ट कैच होगा* जैसे यह वायरलेस या टेलीफोन, टी.वी. यह जो भी साधन हैं.... कितने साधन निकल गये हैं, इससे भी स्पष्ट आपकी कैचिंगपावर, एकाग्रता की शक्ति से बढ़ेगी। यह आधार तो खत्म होने ही हैं। यह सब साधन किस आधार पर हैं? *लाइट के आधार पर। जो भी सुख के साधन हैं मैजारिटी लाइट के आधार पर हैं।* तो क्या आपकी आध्यात्मिक लाइट, आत्म लाइट यह कार्य नहीं कर सकती! जो चाहो वायब्रेशन नजदीक के, दूर के कैच कर सकेंगे। अभी क्या है, *एकाग्रता की शक्ति मन-बुद्धि दोनों ही एकाग्र हो तब कैचिंग पावर होगी। बहुत अनुभव करेंगे। संकल्प किया - नि:स्वार्थ, स्वच्छ, स्पष्ट वह बहुत क्विक अनुभव करायेगा।* साइलेन्स की शक्ति के आगे यह साइन्स झुकेगी। अभी भी समझते जाते हैं कि साइंस में भी कोई मिसिंग हैं जो भरनी चाहिए।

➳ _ ➳ इसलिए बापदादा फिर से अन्डरलाइन करा रहा है कि *अन्तिम स्टेज, अन्तिम सेवा - यह संकल्प शक्ति बहुत फास्ट सेवा करायेगी। इसीलिए संकल्प शक्ति के ऊपर और अटेन्शन दो।* बचाओ, जमा करो। बहुत काम में आयेगी। प्रयोगी इस संकल्प की शक्ति से बनेंगे। साइंस का महत्व क्यों है? प्रयोग में आती है तब सब समझते हैं हाँ साइंस अच्छा काम करती है। तो *साइलेन्स की पावर का प्रयोग करने के लिए एकाग्रता की शक्ति चाहिए और एकाग्रता का मल आधार है - मन की कन्टोलिंग पावर. जिससे मनोबल बढता

है।* मनोबल की बड़ी महिमा है, यह रिद्धि-सिद्धि वाले भी मनोबल द्वारा अल्पकाल के चमत्कार दिखाते हैं। आप तो विधि पूर्वक, रिधि सिद्धि नहीं, विधि पूर्वक कल्याण के चमत्कार दिखायेंगे जो वरदान हो जायेंगे, आत्माओं के लिए यह संकल्प शक्ति का प्रयोग वरदान सिद्ध हो जायेगा।

➳ _ ➳ 2. *अगर संकल्प शक्ति पावरफुल है तो यह सब स्वत: ही कन्ट्रोल में आ जाते हैं। मेहनत से बच जायेंगे। तो संकल्प शक्ति का महत्व जानो।*

➳ _ ➳ 3. आखिर आपके संकल्प की शक्ति इतनी महान हो जायेगी - जो सेवा में मुख द्वारा सन्देश देने में समय भी लगाते हो, सम्पत्ति भी लगाते हो, हलचल में भी आते हो, थकते भी हो..लेकिन श्रेष्ठ संकल्प की सेवा में यह सब बच जायेगा। बढ़ाओ। *इस संकल्प शक्ति को बढ़ाने से प्रत्यक्षता भी जल्दी होगी।*

✺ *ड्रिल :- "निःस्वार्थ, स्पष्ट, स्वच्छ संकल्प शक्ति को बढ़ाने का अनुभव"*

➳ _ ➳ अमृतवेला आंख खुलते ही बाबा की गोद मे स्वयं को विराजित देख अनायास खुशी व सुकून को अनुभव कर मैं आत्मा अशरीरी, फरिश्ता स्वरूप में मीठे बाबा के संग मीठे परमधाम की ओर जा रही हूं... *सर्व शक्तिमान बाबा के स्पर्श से पुलकित मैं आत्मा बाबा के नज़र से निहाल हो रही हूं... बाबा शक्तियों के, गुणों के ख़ज़ाने से मुझ आत्मा को अंदर से भर रहे है...* मुझ आत्मा की आंतरिक कमी कमजोरियों को मिटाने की बाबा की कवायद देख मैं आत्मा सच्चे दिल से बाबा के प्रेम को महसूस कर रही हूं...

➳ _ ➳ मुझे मीठे बाबा की दृष्टि में वही बात दिख रही है कि अविनाशी आत्मा अपने सर्व शक्तियों को सम्पूर्ण विश्व की सेवा में प्रयोग करने की तैयारी का समय आ चुका है... *अब चारों ओर अपने संकल्प शक्ति का प्रयोग कर दु:ख कष्ट से मुक्त करने का समय है...* मुझ आत्मा को बाबा की आज्ञा बुद्धि से स्पष्ट समझ आ रही है... जितना जितना *विनाश का समय करीब आ रहा है बाबा. संकल्प शक्ति दवारा. शांति के वाइब्रेशन दवारा आत्माओं की सेवा

करने का आदेश दे रहे है...* मैं आत्मा मन बुद्धि की एकाग्रता से संकल्प शक्ति की तीव्रता को बढ़ा रही हूँ... मैं आत्मा अपने अविनाशी शक्तियों को और सूक्ष्म रीति प्रयोग करने की कला सीख रही हूं...

➳ _ ➳ मैं आत्मा स्वयं के फरिश्ता स्वरूप के कर्तव्यों को फिर से याद कर बाबा से विदाई ले वापिस लौट रही हूं... आज मन बुद्धि की एकाग्रता से आत्माओं के वाइब्रेशन कैच करने की आश लिए मैं फरिश्ता विश्व गोले पर विराजमान हो जाती हूं... फरिश्ता स्वरूप में बैठ मन बुद्धि को एकाग्र कर सुनने की कोशिश कर रही हूं... *कुछ ही सेकंड में इतना क्रंदन, आर्तनाद, शोर सुन मैं फरिश्ता एक पल के लिए स्तंभित हो बाबा को याद करने लगती हूं... बाबा इशारा देते है संकल्प की शक्ति का प्रयोग कर उन्हें शांति से भरपूर करना है...*

➳ _ ➳ बाबा का इशारा पाते ही मैं फरिश्ता *अपने समर्थ व शुभ संकल्पों की जादुई छड़ी हाथ मे उठाये विश्व गोले को सफेद प्रकाश से भरपूर करने गोले की परिक्रमा कर रही हूं...* शांति सुख प्रेम एवं शक्ति की ऊर्जा से ओतप्रोत सफेद प्रकाश से विश्व को भरपूर कर रही हूं... *अपने फरिश्ता स्वरूप में स्थित होकर मैं आत्माओं के अंतर्मन के रुदन कुछ शांत होते हुए देख रही हूं...* सभी को मीठे बाबा की मीठी शक्तिशाली सकाश से भरपूर होते देख रही हूं... थोड़ी ही देर में सभी के मुख पर शांति की प्रतिच्छवि देख खुद भी सुकून महसूस कर रही हूं...

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔